देश के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में

जाट समाज का योगदान

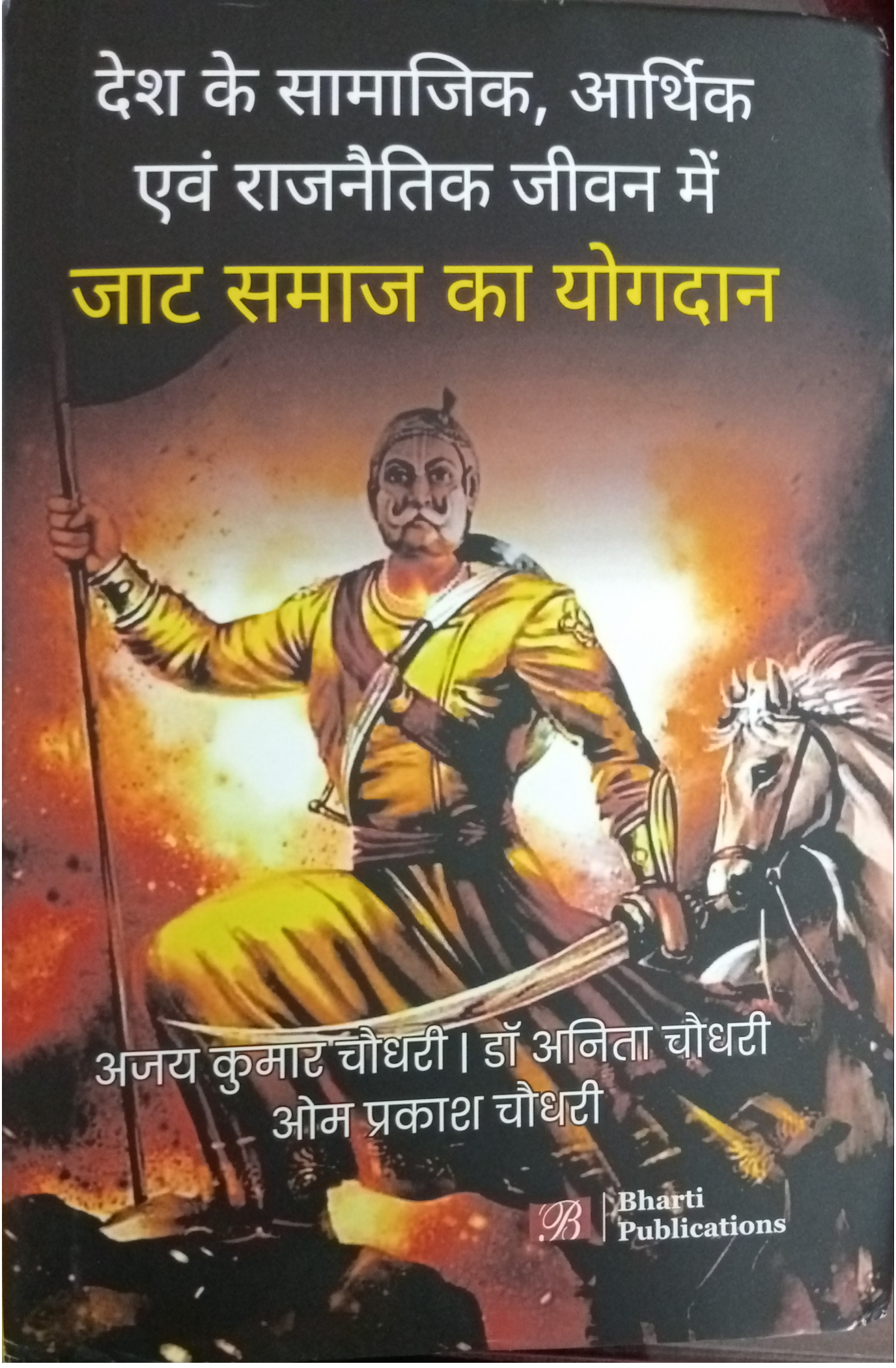

अजय कुमार चौधरी । डॉ अनिता चौधरी
ओम प्रकाश चौधरी

Bharti Publications

देश के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में जाट समाज का योगदान

संपादक मंडल

अजय कुमार (चौधरी)

डॉ. अनिता (चौधरी)

ओम प्रकाश (चौधरी)

भारती पब्लिकेशन

नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

सर्वाधिकार सुरक्षित : संपादक

शीर्षक : देश के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में जाट समाज का योगदान

संपादक : अजय कुमार (चौधरी), डॉ अनीता (चौधरी), ओम प्रकाश (चौधरी)

प्रथम संस्करण: 2023

ISBN : 978-81-19757-49-7

प्रकाशक:
भारती पब्लिकेशन्स
4819/24, दुसरी मंजिल, अंसारी रोड
दरिया गंज, नई दिल्ली–110002
फोन नं.: 011–23247537, 9899897381
ई-मेल: bhartipublications@gmail.com
Website: www.bhartipublications.com

मुद्रक : एस. पी. कौशिक, दिल्ली

अस्वीकरण:
पुस्तक में दी गई विषय वस्तु पूर्ण रूप से लेखक के अपने विचार हैं। प्रकाशक किसी भी विषय वस्तु के लिए जिम्मेदार नही हैं। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा किसी के द्वारा पुनरुत्पादित या प्रेषित बिना अनुमति के नहीं किया जा सकता है। इस प्रकाशन के संबंध में किसी भी व्यक्ति द्वारा अनधिकृत कार्य या नुकसान के लिए आपराधिक अभियोजन के लिए वह व्यक्ति उत्तरदायी होगा।

SCAN AnyScanner

अनुक्रम

दो शब्द — vi-vii

भूमिका — x

1. जाटों का इतिहास, जाट शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई — 1-10
   डॉ. राकेश सिंह
2. जाट समाज का इतिहास एवं संस्कृति — 11-18
   मधुस्मिता नायक
3. प्रमुख जाट रियासतों का अध्ययन — 19-25
   मधुस्मिता नायक
4. मुगल बादशाह औरंगजेब के शासन काल में जाटों का विद्रोह (वीर जाट गोकुल) — 26-29
   डॉ. विवेक पाठक
5. स्वतंत्रता आंदोलन में जाट समाज का योगदान — 30-35
   डॉ. पोपट भावराव बिरारी
6. 1857 हरियाणा में क्रांति की ज्वाला — 36-42
   डॉ. प्रवीण पाठक
7. आजादी के आन्दोलन में जाट योद्धाओं का अवदान — 43-52
   डॉ. मोहन चौधरी
8. भारत के बदलते परिदृश्य में कृषि समाज के सतत विकास पर सर छोटू राम की प्रासंगिकता — 53-58
   विकास कुमार
9. लोहारू रियासत में किसानों का विद्रोह — 59-65
   जितेन्द्र
10. 'शेखावटी' जाट किसान आंदोलन — 66-71
    प्रीतम, डॉ. आशारानी दाश

SCAN AnyScanner

72-78

11. राजनीति में जाट समाज का योगदान
डॉ. रमेश प्रसाद कोल 79-94

12. खेलों में जाट समाज का योगदान
डॉ. अनीता चौधरी, आशीष 95-106

13. जाट-औरंगजेब प्रतिरोध 1669-1689
प्रोफेसर (डॉ.) लता अग्रवाल 107-115

14. स्वामी केशवानंद
मधुस्मिता नायक 116-124

15. शेर-ए-पंजाब (महाराजा रणजीत सिंह के विशेष संदर्भ में)
राजेश मौर्य 125-134

16. महाराजा सूरजमल-व्यक्तित्व एवं कृतित्व
डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता 135-147

17. गौ-रक्षक लोकदेवता बिग्गाजी
जोगाराम सारण 148-152

18. रागिनी योद्धा जाट मेहर सिंह
मनजीत सिंह 153-156

19. चौधरी देवीलाल चौटाला
अजय कुमार (चौधरी), ओम प्रकाश (चौधरी) 157-166

20. जाट समाज की बहुमूल्य शख्सियतें
अजय कुमार (चौधरी) 167-169

21. हरफूल जाट जुलानीवाला
मनजीत सिंह 170-174

22. जाट रेजिमेंट इतिहास
डॉ. देवीदास विजय भोसले, श्री. अनिकेत प्रल्हाद डमाळे 175-178

23. किसानों के मसीहा सर चौधरी छोटू राम
अनिशा जोशी 179-184

24. चौधरी चरण सिंह
विपुल धनकड़

AnyScanner

22

जाट रेजिमेंट इतिहास

◂ डॉ देवीदास विजय भोसले, प्रो. अनिकेत प्रल्हाद डमाळे ▸

परिचय

राष्ट्र की सुरक्षा कई आधारों पर तय की जाती है, लेकिन इस विचार का एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू देश के सैनिक हैं। देश के इतिहास में भी हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रत्येक सैनिक की वीरता जीत में योगदान देती है और ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं कि सैनिकों ने हार जैसी परिस्थितियों में भी केवल अपने मनोबल से लड़ाई जीत ली। इस संबंध में भारतीय सेना की मानें तो वह इतिहास से लेकर आज तक कई युद्धों में अपनी वीरता का लोहा मनवा चुकी है। भारतीय सैन्य संगठन की बात करें तो इसमें कई रेजिमेंट शामिल हैं। आज तक, इन सभी रेजिमेंटों ने अपनी वीरता के कारण कई युद्धों कहानियों को अमर कर दिया है। भारतीय सेना में कई महत्वपूर्ण रेजिमेंट हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण रेजिमेंटों में से एक जाट रेजिमेंट है। जाट रेजिमेंट को भारतीय पैदल सेना में सबसे पुरानी और सबसे शानदार बहादुर रेजिमेंटों में से एक माना जाता है। जाट रेजिमेंट की बहादुरी का इतिहास हर लड़ाई में देखने को मिलता है. ब्रिटिश काल से लेकर भारत की आजादी तक, विभिन्न संघर्षों में जाट रेजिमेंट की भागीदारी देखी जा सकती है। जाट रेजिमेंट ने अपनी अटूट बहादुरी के लिए कई वीरता सम्मान जीते हैं। 1839 और 1947 के बीच जाट रेजिमेंट के इतिहास के साथ-साथ 1947 में भारत की

* सहायक प्रोफेसर और प्रमुख, रक्षा और सामरिक अध्ययन विभाग, तुलजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती (एमएस)

* सहायक प्रोफेसर, रक्षा और सामरिक अध्ययन विभाग, तुलजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती (एमएस)

SCAN AnyScanner

आजादी के बाद भारतीय सेना के योगदान पर विचार करना महत्वपूर्ण है, इसलिए वर्तमान टुकड़े से हमें जाट रेजिमेंट के इतिहास और इसके वर्तमान कर्तव्य पर नज़र रखनी चाहिए . यहां जाट रेजिमेंट के विकास और इतिहास का सारांश दिया गया है

पृष्ठभूमि

हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य जाटों के बहुमत का घर हैं, एक जातीय समूह जो ज्यादातर भारत के उत्तर-पश्चिम में पाया जाता है। जाट, जो अपनी कृषि जड़ों और मार्शल रीति-रिवाजों के लिए प्रसिद्ध) हैं, यह सैन्य सेवा की एक व्यापक परंपरा है। जाट सैनिको के पीछे दो शताब्दियों से अधिक की शानदार सैन्य सेवा है। 1795 में कलकत्ता नेटिव मिलिशिया के रूप में गठित इस समूह को नियमित पैदल सेना बटालियन बनने के बाद 1859 में बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की 18वीं बटालियन का नाम दिया गया था। जाट सैनिकों ने 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी की शुरुआत में लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन वर्षों में, रेजिमेंट पदनाम और संख्या में कई बदलावों से गुज़री।

विश्व युद्ध

(प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध) दोनों के दौरान, जाट रेजिमेंट ने विभिन्न अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसने पश्चिमी मोर्चे, मेसोपोटामिया आधुनिक इराक, फारस इरान, उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया सहित कई मोर्चों पर सेवा की। रेजिमेंट के सैनिकों ने बहुत साहस दिखाया और अपनी अनुकरणीय सेवा के लिए कई युद्ध) सम्मान और पुरस्कार अर्जित किए।

स्वतंत्रता के बाद

1947 में ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी के बाद, जाट रेजिमेंट नवगठित भारतीय सेना का हिस्सा बन गई। इसने सेवा की अपनी गौरवशाली परंपरा को जारी रखा और 1947-1948, 1965, 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध और 1999 में कारगिल संघर्ष सहित विभिन्न सैन्य अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विस्तार और पुनर्गठन

पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय सेना की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए जाट रेजिमेंट का विस्तार और पुनर्गठन हुआ। नई बटालियनें खड़ी की गईं और रेजिमेंट ने अपनी जाट वंशावली को बनाए रखते हुए विभिन्न क्षेत्रें और समुदायों के सैनिकों को शामिल करने के लिए अपनी संरचना में विविधता लाई।

SCAN AnyScanner

आदर्श वाक्य और प्रतीक चिन्ह

जाट रेजिमेंट का आदर्श वाक्य हिंदी में संगठन वा वीरता है, जिसका अंग्रेजी में अनुवाद Unity and Valour है । रेजिमेंट के प्रतीक चिन्ह में एक शेर है, जो शक्ति, साहस और गौरव का प्रतीक है।

आज, जाट रेजिमेंट भारतीय सेना की प्रतिष्ठित और सम्मानित पैदल सेना रेजिमेंटों में से एक है। यह उन समर्पित सैनिकों की भर्ती और प्रशिक्षण जारी रखता है जो राष्ट्र के प्रति रेजिमेंट की बहादुरी और सेवा की विरासत को कायम रखते हैं।

रेजिमेंटल सेंटर: जाट रेजिमेंट का रेजिमेंटल सेंटर भारत के उत्तर प्रदेश के बरेली में स्थित है। यह रेजिमेंट के लिए प्रशिक्षण और प्रशासनिक केंद्र के रूप में कार्य करता है।

युद्ध सम्मान: जाट रेजिमेंट ने अपनी वीरता और विशिष्ट सेवा के लिए कई युद्ध सम्मान अर्जित किए हैं। कुछ उल्लेखनीय युद्ध सम्मानों में घेलुवेल्ट, कुट-अल-अमारा 1917, टिक टिक, बेसिन, सिताउंग, वर्मा 1942-45, डोगरा,और छंब शामिल हैं।

परमवीर चक्र

परमवीर चक्र दुश्मन के सामने वीरता के लिए भारत का सर्वोच्च सैन्य सम्मान है। जाट रेजिमेंट ने इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के दो प्राप्तकर्ता बनाए हैं: लांस नायक करम सिंह 1948 भारत-पाक युद्ध और मेजर सोमनाथ शर्मा 1947 भारत-पाक युद्ध।

संयुक्त राष्ट्र शांति सेना में सहभाग: जाट रेजिमेंट ने संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशनों में भी योगदान दिया है। इसके सैनिकों ने कांगो, अंगोला, सोमालिया, सिएरा लियोन और लेबनान जैसे देशों में सेवा की है, जो अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के प्रति रेजिमेंट की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

रेजिमेंटल युद्ध स्मारक: जाट रेजिमेंट का एक युद्ध स्मारक बरेली में स्थित है। यह उन बहादुर सैनिकों को श्रद्धांजलि के रूप में कार्य करता है जिन्होंने रेजिमेंट में सेवा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। यह स्मारक रेजिमेंट के शहीद नायकों की याद और सम्मान के लिए एक पवित्र स्थान है।

भर्ती और प्रशिक्षण: जाट रेजिमेंट भारत के विभिन्न क्षेत्रें और समुदायों से सैनिकों की भर्ती करना जारी रखती है। रंगरूटों को रेजिमेंटल सेंटर में कठोर प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है, जो शारीरिक फिटनेस, हथियार संचालन, सामरिक कौशल और अनुशासन और सौहार्द के मूल्यों पर केंद्रित होता है।

खेल और साहस: जाट रेजिमेंट का खेल और साहसिक गतिविधियों पर विशेष जोर है। सैनिक एथलेटिक्स, फुटबॉल, हक्की, मुक्केबाजी और कुश्ती सहित विभिन्न खेल

आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। रेजिमेंट पर्वतारोहण, रॉक क्लाइंबिंग और अन्य साहसिक खेलों को भी प्रोत्साहित करती है।

जाट रेजिमेंट का शानदार इतिहास, विशिष्ट सेवा और भारत की रक्षा में योगदान इसे भारतीय सेना के भीतर एक प्रतिष्ठित और सम्मानित संस्थान बनाता है। रेजिमेंट के सैनिक वीरता, खंड़ संकल्प और अदम्य भावना का प्रतीक हैं जो पूरे इतिहास में जाटों की विशेषता रही है।

विभिन्न युद्धों में जाट रेजिमेंट की भूमिका: भारतीय सेना की सबसे पुरानी और प्रतिष्ठित पैदल सेना रेजिमेंटों में से एक, जाट रेजिमेंट ने पूरे इतिहास में विभिन्न युद्धों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी वीरता, अनुशासन और कर्तव्य के प्रति अटूट प्रतिबंधता के लिए जानी जाने वाली जाट रेजिमेंट ने देश की संप्रभुता की रक्षा और उसके हितों की रक्षा में अमूल्य योगदान दिया है। यहां, हम कई प्रमुख युद्धों में जाट रेजिमेंट की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं:

प्रथम विश्व युद्ध

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, जाट रेजिमेंट ने मेसोपोटामिया अभियान और पश्चिमी मोर्चे सहित युद्ध के विभिन्न क्षेत्रें में विशिष्टता के साथ काम किया। रेजिमेंट ने ओटोमन साम्राज्य के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और महत्वपूर्ण स्थानों पर कब्जा करने और सहयोगी सेनाओं की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

द्वितीय विश्व युद्ध

द्वितीय विश्व युद्ध में, जाट रेजिमेंट ने उत्तरी अफ्रीका, इटली और दक्षिण पूर्व एशिया सहित कम्र थिएटरों में कार्रवाई देखी। रेजिमेंट ने गजाला की लड़ाई, मोंटे कैसिनो की लड़ाई और इफाल की लड़ाम्र जैसी महत्वपूर्ण लड़ाइयों में भाग लिया, और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के सामने असाधारण बहादुरी का प्रदर्शन किया।

भारत-पाक युद्ध

जाट रेजिमेंट ने 1947-48 के युद्ध, 1965 के युद्ध और 1971 के युद्ध सहित विभिन्न भारत-पाक युद्धों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संघर्षों के दौरान, रेजिमेंट ने असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया और दुश्मन के ठिकानों पर कब्जा करने, रणनीतिक स्थानों की रक्षा करने और दुश्मन ताकतों के खिलफ सफल अभियान चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कारगिल यद्ध

1999 के कारगिल युद्ध में, जाट रेजिमेंट ने द्रास, कारगिल और बटालिक सेक्टरों में पाकिस्तानी घुसपैठियों से रणनीतिक ऊंचाइयों पर कब्जा करने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई। रेजिमेंट के सैनिकों ने कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण और दुर्गम इलाकों में अनुकरणीय बहादुरी और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया, जिससे दुश्मन को भारतीय क्षेत्र से साफलतापूर्वक खदेड़ दिया गया।

उग्रवाद विरोधी अभियान: जाट रेजिमेंट जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों सहित भारत के विभिन्न क्षेत्रें में उग्रवाद विरोधी अभियानों में सक्रिय रूप से शामिल रही है। रेजिमेंट आतंकवाद का मुकाबला करने और कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने में सबसे आगे रही है, प्रभावित क्षेत्रें में शांति और स्थिरता बहाल करने में अपार साहस, व्यावसायिकता और समर्पण का प्रदर्शन कर रही है।

निष्कर्ष

अपने पूरे इतिहास में, जाट रेजिमेंट ने कई युद्धों और ऑपरेशनों में लगातार अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। रेजिमेंट के सैनिकों को उनकी बहादुरी और निस्वार्थता के असाधारण कार्यों के लिए परमवीर चक्र, महावीर चक्र और वीर चक्र सहित कई वीरता पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जाट रेजिमेंट देश की रक्षा के लिए साहस, अनुशासन और प्रतिबद्धता का एक शानदार उदाहरण बनकर काम कर रही है और हर गुजरती पीढ़ी के साथ अपनी गौरवशाली विरासत को बरकरार रख रही है।

संदर्भ

1. Army*s Jat Regiment Best Marching Contingent in Republic Day 2007 and 2021 Parade | India Defence Archived 2007&02&02 at the Way back Machine
2. PREGIMENTAL HISTORYÞ- Retrieved 2021&08&20-
3. Army*s Jat Regiment Best Marching Contingent in Republic Day 2007 Parade | India Defence http%@@www-dsalert-org@gallantry & awards@shaurya & chakra
4. ÞOfficial Website of Indian ArmyÞ- Retrieved 26 November 2014
5. ÞIndia Military Guide-
6. Official Website of Indian ArmyÞ- Retrieved 26 November 2014
7. 24th battalion of Jat Regiment to be raised in BareillyÞ- The Times of India- 2020&08&31- Retrieved 2021&08&20
8. The Official Home Page of the Indian Army
9. Mohan] Vijay ¼6 July 2016½- ÞJat Regiment raises new battalionÞ- The Tribune- Archived from the original on 6 May 2020- The Jat Regiment] which draws its manpower primarily from the state of Haryana and its adjoining areas-

SCAN AnyScanner